BY...Dr.Riteshramnani 09414906622, 09782269989 _

आयुर्वेद का इतिहास

आयुर्वेद का आद्य उपदेष्टा – ब्रह्मा
प्रथम ग्रन्थ ब्रह्मसंहिता (1 लाख श्लोक, 1 हजार अध्याय)
आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है।
चरण व्यूह व प्रस्थानभेद के अनुसार आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है।
काश्यप ने आयुर्वेद को पंचम वेद माना है।
आयुर्वेद के आधारभूत सिद्धान्त – सांख्य व योग दर्शन से।
आयुर्वेद के व्यवहारिक सिद्धान्त – वैशेषिक व न्याय दर्शन से।

वेद		**उपवेद**
1.ऋग्वेद	–	धनुर्वेद
2.यजुर्वेद	–	स्थापत्यवेद
3.सामवेद	–	गान्धर्ववेद
4.अथर्ववेद	–	आयुर्वेद

आयुर्वेदावतरण

चरक	सुश्रुत	अष्टांग हृदय	अष्टांग संग्रह	काश्यप	भावप्रकाश	भास्कर
ब्रह्मा दक्ष प्रजापति अश्विनी कुमार इन्द्र भारद्वाज	ब्रह्मा दक्ष प्रजापति अश्विनी कुमार इन्द्र धन्वन्तरि	ब्रह्मा दक्ष प्रजापति अश्विनी कुमार इन्द्र आत्रेयादि	इन्द्र आत्रेय धन्वन्तरि भारद्वाज निमि काश्यप	ब्रह्मा अश्विनी कुमार इन्द्र काश्यप वशिष्ठ अत्रि भृगु	ब्रह्मा इन्द्र आत्रेय अग्निवेश	प्रजापति पंचम वेद भास्कर 16 शिष्य धन्वन्तरि दिवोदास काशीराज आदि

ब्रह्मवैवर्तपुराण में भास्कर संप्रदाय का उल्लेख मिलता है। भास्कर के 16 शिष्यों ने निम्न ग्रन्थ लिखे।

1.धनवन्तरि – चिकित्सा तत्व विज्ञान।
2.काशिराज – चिकित्सा कौमुदि ।
3.नकुल – वैधक सर्वस्व।
4.यम – ज्ञानार्वण।
5.जनक – वैध संदेह भंजन।
6.जाबाल – तंत्रसार ।
7.पैल – निदान ।
8.अगस्त्य –वैद्य निर्णय ।
9.दिवोदास – चिकित्सा दर्पण ।
10.अश्विनी कुमार –चिकित्सा सार तंत्र ।
11.सहदेव – व्याधि सिन्धु विमर्दन
12.च्यवन –जीवादान
13.बुध – सर्वसार
14.जाजंलि – वेदांगसार ।
15.कवथ – सर्वधर ।

प्रमुख ऋषि

1.कांकायन – बाल्हीक भिषक्
2.महर्षि पैंगि –चीनी चिकित्सक
3.हिरण्याक्ष – यूरोपीय चिकित्सक
4.रावण – पुलस्त्य के पुत्र
– नाड़ी विज्ञान के ज्ञाता
5.बदरायण –गरूण व अग्नि पुराण के रचियता

16.दस्त्र – भ्रमध्न ।

भूलोक की सबसे बड़ी संहिता – क्षारपाणी संहिता (अप्राप्त), चिकित्सा सार संग्रह–वंगसेन

वेदों का काल 5000–2000 ई. पू.

वैदिक वांगमय के 4 खंड हैं – संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद व वेदांग

संहिता – जिसमें विषय के समान अंग का समावेश हो

ब्राह्मण – वेदों की व्याख्या करने वाला भाग

उपनिषद् – गुरू के समीप वैठकर अध्ययन

वेदांग – ये 6 माने गये हैं– ज्योतिष, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द व निरूक्त (काश्यप ने 7 वेदांग माने हैं– उक्त 6 + ज्ञान राशि)

वेदों में 12 व्याधियों का वर्णन किया गया है। ज्वर कास अपचि हरिमा मूत्रावरोध श्वित्र किलास विसूचिका उन्माद जायन्य आस्त्रव।

वेदों में रोगों के 3 कारण माने गये हैं– शरीरस्थ विष, कृमि व त्रिदोष

ऋग्वेद (4000–6000 ई. पू.)

रूद्र को **प्रथम देव भिषक** कहा है।

अश्विनीकुमार (नासत्य, दश्र) –**देवानां भिषजो** – सर्वाधिक प्रसिद्ध देव भिषक कहा है। अश्विनी कुमार ने दधिऋषि से मधुविद्या प्राप्त की।

ऋग्वेद के सायन भाग में यकृत को यकृतपिंड, रक्ताधार, रक्ताशय आदि नामों से उल्लेखित किया गया है।

त्रिदोष के लिए त्रिधातु शव्द प्रयुक्त हुआ है।

दैवव्यपाश्रय व यक्तिव्यपाश्रय औषध का प्रयोग वर्णित है।

सूर्यचिकित्सा, वायुचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, जलचिकित्सा, पशुचिकित्सा का उल्लेख हुआ है।

सूर्य का स्थावर जांगम सबकी आत्मा कहा है। हृदय रोग में सूर्य चिकित्सा का उल्लेख आया है।

यजुर्वेद

कुल 40 अध्याय हैं। इसमें 81 औषधियों का वर्णन है।

सामवेद

75 ऋचाओं में वर्गीकृत है। इसमें केवल कर्मकाण्ड संबंधी वर्णन है।

अथर्ववेद –

भूतविद्या का आकारग्रन्थ है।

20 काण्ड, 730 सुक्त व 5987 मंत्र हैं।

आयुर्वेद का अधिकांश वर्णन द्वितीय काण्ड में है।

अथर्ववेद के उपनिषद 3– प्रश्न, मण्डूक, माण्डूक्य

अथर्ववेद के कल्पसूत्र –5 शौनक, वैतान, नक्षत्रकल्प, आंगिरससंकल्प, शान्तिकल्प

अथर्ववेद की शाखा 9– पैप्पलाद, तौद, मौद, जालज, जलद, शौनकीय, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य

वात को वायु, पित्त को मायु तथा कफ को बलास कहा है।

अभ्र शब्द से कफ तथा शुष्म शब्द से पित्त का ग्रहण होता है।

वात के पांच भेद –नाग, कूर्म, कूमल, देवदत्त तथा धनंजय बताए हैं।

ओज का सर्वप्रथम वर्णन हुआ है। पुष्पों का सार मधु तथा धातुओं का सार ओज को बताया है।
निज तथा आगन्तुज रोगों के लिए रोग एवं आस्त्राव शब्द का प्रयोग हुआ है।
अथर्ववेदोक्त विषघ्न औषधियां – अपामार्ग, वरुण, तौदी, लाक्षा।
अथर्ववेद में मानव उपयोग के लिए सर्वप्रथम उपयोगी औषध **प्रश्निपर्णी** को बताया है।
औषधियों में अग्नि तथा रूद्र का निवास बताया है।
अथर्ववेद भूतविद्या का आकारग्रंथ है।
रोगों के 2 भेद – शपथ्य (आहार निमित्तज), वरुण्य (शापादि निमित्तज) माने हैं।
औषधि के 4 विभाग माने है – वनस्पति, वानस्पत्य, वीरूध, औषध
चिकित्सा के 4 भेद माने है –
आर्थवणी –जप तप मंत्र द्वारा चिकित्सा ।
अंगिरस – मानसिक शक्ति से चिकित्सा ।
दैवी –रसायन चिकित्सा ।
मनुष्यजा –औषध चिकित्सा ।
वनस्पतियो का मूल समुद्र को माता पृथ्वी को तथा पिता अन्तरिक्ष को माना है।

वेदों में औषध संख्या–

ऋग्वेद – 67	**यजुर्वेद – 81**	**अथर्ववेद –289**	**उपनिषद –31**	**ब्राह्मणग्रंथ – 129**

संहिता – जिसमें विषय के समान अंग का समावेश हो।
तंत्र – जिसमें सूत्र रूप में वर्णन हो तथा भविष्य में विस्ताार की सम्भावना हो।
बृहत्त्रयी – चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय/अष्टांग संग्रह
लघुत्रयी – माधवनिदान, शारंर्गधर संहिता, भावप्रकाश
प्राचीनकाल के अंतिम आचार्य वाग्भट्ट थे।
माध्यकाल को संग्रहकाल अथवा टीकाकाल भी कहा जाता है।
मध्यकाल में अधिकांश टीकाकार हुए तथा जेज्जेट (9वीं सदी) से प्रारम्भ हुआ।

आयुर्वेद काल विभाजन

1.आदिकाल या प्राचीन काल – आरम्भ से 8 वीं सदी तक।
2.मध्य काल या स्रंग्रह काल या टीका काल –9 वीं सदी से 16 वीं सदी तक ।
3.आधूनिक काल – 17 वीं सदी से आज तक ।

प्राचीन काल

1.भट्टार हरिश्चन्द्र – चरक न्यास व खरनाद संहिता का प्रतिसंस्कार।
2.स्वामि कुमार – चरक पंजिका
3.आषाढ़ वर्मा – परिहार वर्तिका।
4.पतंजली – चरक वार्तिक व सिद्धान्त सारावती ।
5.क्षीरस्वामिदत्त – वर्तिकाकार के रूप मे प्रसिद्ध– चरक वर्तिका ।
6.नन्दी – चरक व सुश्रुत पर टीका ।

मध्य काल

1.जेज्जट – वृहत्त्रयी पर टीका । चरक पर निरन्तर पद व्याख्या ।
2.सूधीर – चरक व सश्रुत पर टीका
3.माधव – सुश्रुत श्लोक वर्तिका या प्रश्न सहस्त्र विधान । सुश्रुत टिप्पणी ।

4.अमितप्रभ –न्यास। चरक पर ।
5.चन्द्रट – तीसटाचार्य का पुत्र व सुश्रुत पाठसंशुद्धि करता ।
चिकित्सा कलिका पर व्याख्या।योग रत्न समुच्चय। योगमुष्टि। वैध कोश ।
6.चन्द्रनन्दन – पदार्थ चन्द्रिका (अ.हृ. पर) व गण निघण्टु व अष्टांगनिघण्टु।
7.ब्रम्हदेव – सरक व सुश्रुत पर व्याख्या।
8.गयदास या चन्द्रिकाकार – चरक चन्द्रिका(चरक) व न्याय चन्द्रिका या वृहत पंजिका (सुश्रुत)
9.नरदत्त – वृहत तन्त्र प्रदीप चरक पर
10.चक्रपाणिदत्त
या चरकचतुरानन
या सुश्रुतसहस्त्रनयन –आयुर्वेद दीपिका(चरक)।
– भानुमति या तात्पर्यतिका (सुश्रुत सूत्रस्थान पर)।
–चक्रदत्त (चिकित्सा संग्रह)–इस पर निश्चलकर ने रत्नप्रभा टीका।
–शब्दचन्द्रिका(द्रव्यगुणसंग्रह),व्याकरण तत्व चन्द्रिका ,सर्वसार संग्रह।
11.भास्कर या पंजिकाकार – लघुपंजिका सुश्रुत पर।
12.डल्हण – निबन्ध संग्रह संश्रुत पर।
13.विजयरक्षित –मधुकोष व्याख्या माधव पर ।
14.श्रीकण्ठदत्त –मधुकोष व्याख्या पूर्ण की।वृन्द माधव पर कुसुमावली व्याख्या।
15.सनातन – नागार्जुनकृत योगशतक पर वल्लभ टीका।
16.अरूणदत्त – सर्वांगसुन्दरा अष्टांगहृदय पर।
17.इन्दु – शशिलेखा टीका अ.स. पर व इन्दुमति टीका अ.हृ. ।
18.हेमाद्री –आयूर्वेद रसायन अ.हृ. पर ।चतुर्वग चिन्तामणि –मौलिक ग्रन्थ ।
19.बोपदेव–शतश्लोकि शारंग्धर पर –इसी पर चन्द्रकला व्याख्या।
20.आशाधर – अष्टांगहृद्योपघात।
21.आढमल्ल – दीपीका टीका शारंग्धर पर ।
22.वाचस्पति – आतंकदर्पण माधव निदान पर।
23.शिवदास सेन – चरक तत्व प्रदिपिका चरक सूत्रस्थान पर ।
– तत्व बोध अ.हृ. उत्तरतंत्र पर । तत्व चन्द्रिका चक्रदत्त पर ।
24.श्रीनाथ पण्डित –परहित संहिता
25.लोलिम्बराज –वैधकजीवन
26.जैन हर्ष कीर्ती सूरी – योग चिन्तामणि ।

आधुनिक काल

1.काशीराम वैध – गूढार्थ दीपिका शारंग्धर पर ।
2.नरसिह कविराज – रोगविनिश्चय विवरण व सिद्धानत चिन्तामणि माधव पर
– चरक प्रकाश कौस्तुभ चरक पर।
3.रूद्रभट्ट –गूढ़ान्त दीपिका या आयुर्वेद दीपिका शारंग्धर पर ।दीपिका टीका –वैधक जीवन पर।
4.रामसेन – मीरजाफर के राजवैध कवीन्द्रमणी के रूप मे प्रसिद्ध।
– रसेन्द्र सार संग्रह व रसेन्द्र चिन्तामणी पर टीका ।
5.गंगाधर राय – जल्कपतरू टीका चरक पर
– भास्करोदय, नाड़ी परिक्षा मृत्युन्जय संहिता, भैषज्य रामायण ।
6.हाराण चन्द्र – सुश्रुतार्थ संदीपन ।
7.योगिन्द्रनाथ सेन – चरकोपस्कार ।
8.ज्यातिषचन्द्रसरस्वति – चरक प्रदिपिका ।

9.जयदेव विद्यालंकार –चरक सूत्र पर हिन्दी टीका । चिकित्साकलिका पर हिन्दी व्याख्या
– भै. र. पर हिन्दी व्याख्या।
10.अत्रिदेव विद्यालंकार – चरक सुश्रुत वाग्भट पर हिन्दी टीका।
–सम्पूर्ण अ. स. पर एकमात्र हिन्दी टीका ।
11.भास्कर गोविन्दघाणेकर –सुश्रुतसूत्र व शारीर पर हिन्दी टीका।वैधकीय सुभाषितानि।
12.दत्तात्रेय अनन्तकुलकर्णी – र.र.स. पर विज्ञान बोधिनी हिन्दी टीका ।
13.लालचन्द वैध – अ. हृ. ,अ.स. व भा. प्र. पर हिन्दी टीका।

कुछ रोग विज्ञान से संबंधित साहित्य

माधव निदान(रोगविनिश्चय)	माधवकर (7 वीं सदी)	
अंजन निदान	अन्य अग्निवेश (9वीं सदी)	वर्ध्म नामक रोग का वर्णन
हंसराज निदान	हंसराज वैद्य (17वीं सदी)	पर्याय –भिषक चक्रचित्तोस्वे
सिद्धान्त निदान	गणनाथ सेन (20वीं सदी)	
अरिष्ट निदान	रमानाथ द्विवेदी	
आयुर्वेद व्याधि विज्ञान	यादव जी त्रिकम जी	
निदानचिकित्सा हस्तामलक	रणजीत राय देसाई	
रोगी परीक्षाविधि	प्रियव्रत शर्मा	
भास्करोदय	गंगाधर राय	

BHU oriented

प्रियव्रत शर्मा की प्रमुख पुस्तकें–
द्रव्यगुण विज्ञानम् (5भाग), द्रव्यगुण कोष, द्रव्यगुणसूत्रम्, प्रियनिघण्टु, अभिधान रत्नमाला/षड्रस निघण्टु,, नामरूपविज्ञानम्, आयुर्वेद का वृहत् व वैज्ञानिक इतिहास, पुष्पायुर्वेद, आयुर्वेद दर्शन, चरक समज्ञा, चरक चिन्तन, वाग्भट विवेचन, माधव द्रव्यगुण, अभिनव शरीरक्रिया विज्ञान, दोषकारणत्व मीमांसा, षडंग शरीर, षोडषांग हृदय, रागी परीक्षाविधि, Classical Use of Medicinal Plants

चिकित्सा योग ग्रंथ साहित्य

नावनीतकम् – योगसंग्रह ग्रंथों में प्रथम। 3 खण्डों में विभक्त। (1–2 सदी)
योगरत्नसमुच्चय – तीसटाचार्य पुत्र चंद्रट कृत (10वीं सदी)
राजमार्तण्ड/योगसार संग्रह – राजा भोजकृत (11वीं सदी) अस्थिभग्न, वातव्याधि में हडजोङ की पकौङी बनाकर खिलाने का विधान है।
गद निग्रह –सोढ़ल ।
शार्ंग्धर संहिता (13वीं सदी)
शतश्लोकी/बोपदेवशतक – बोपदेवकृत (13वीं सदी)
योग चिंतामणी – जैन हर्ष सूरि कीर्ति
वसवराजीय – वसवराज (15वीं सदी) दक्षिण भारत में सम्मानित ग्रंथ
वैद्यजीवन – लोलिम्ब राज (1625 ई.) **पथ्येसति गदार्तस्य किमौषध निषेवणे** । वैद्यजीवन पर टीका – गूढार्थ दीपिका–गोस्वामी हरिनाथ कृत।
वैद्य कौस्तुभ – वैद्य मेवाराम मिश्र कृत
वैद्य विलास – राघव कृत या रघुनाथ पंडित (1697 ई.)

वैद्यवल्लभ – हस्तिरुचि कृत
वैद्य चिंतामणि – अमरेश्वर भट्ट पुत्र लल्लभेंट द्रनद्रकढी रचित
वैद्यमनोत्सव – बंशीधर मिश्र विरचित वैद्य रहस्य – शंकर भट्ट।
वैद्य मनोरमा – वैद्य कालिदास कृत (उत्तम चुटकुलो का संग्रह) रूद्राक्ष का मसूरिका, अर्कक्षीर का पामा, असनसार का स्थौल्य में प्रयोग बताया।
सिद्ध भैषज्य मणिमाला – कृष्णराम भट्टकृत। (5 गुच्छों में विभक्त) पारद का अंतःप्रयोग बिना किसी योग के बताया।
सिद्धयोग संग्रह – वैद्य यादव जी त्रिकम जी कृत।

चिकित्सा साहित्य – चिकित्सा ग्रंथ

1.माधव चिकित्सक – इंदुकर पुत्र माधव (7वीं सदी) चिकित्सा ग्रंथों में प्रथम ग्रंथ है।
2.सिद्धयोग/वृंदमाधव – वृंद (9वीं सदी)
3.चिकित्साकलिका – तीसटाचार्य (10वीं सदी)
4.चक्रदत्त/चक्रसंग्रह/चिकित्सा संग्रह – चक्रपाणि दत्त (11वीं सदी)
विशिष्ट योग–
आमवात–सिंहनाद गुग्गुलु, गुल्म–कांकायन वटी,
हिक्काश्वास–मयूरपिच्छ भस्म, उन्माद–एन्द्रीफल नस्य,
अतिसार–वटप्ररोह/तिलकल्क, उदावर्त–रसोन
सर्वप्रथम धातुओं व रसौषधियों के अनेक योगों का वर्णन किया है।
जैसे– अर्श–अग्नि मुख लौह, कुष्ठ–नवायस रसायन, पाण्डु–पुनर्नवामण्डूर, योगराज, परिणामशूल–शतावरी मण्डूर, योगराज, वमनार्थ–ताम्र भस्म, राजयक्ष्मा–ताप्यादि लौह
पारद के अनेक योगों का वर्णन है– अर्श–रस गुटिका, ग्रहणी–रसपर्पटी, राजयक्ष्मा–रसेन्द्र गुटिका, मसूरिका–कज्जली, प्लीहा–लोकनाथ रस।
5.वंगसेन/चिकित्सा सार संग्रह – वैद्य गदाधर (अगस्ति संहिता का प्रतिसंस्कार भी किया) पुत्र वंगसेन (12वीं सदी)
सोमरोग का सर्वप्रथम वर्णन। श्लीपद का शाखोटक का प्रयोग बताया है (शरंग्धर ने भी)। राजयक्ष्मा में जातीफलाद्ध (भंगा) योग का सर्वप्रथम वर्णन किया है।
6.भैषज्यरत्नावली – गोविन्ददास सेन (18वीं सदी) आधुनिक रोग वर्णित हैं।
ताण्डव रोग औपसर्गिक रोग ओजोमेह शीर्षाम्बु मस्तिष्क रोग अंशुघात आदि का वर्णन है।
7.योगतरंगिणी – त्रिमल्लभट्ट (1650ई.) संखिया का फिरंग में सर्वप्रथम प्रयोग वर्णित किया।
8.आतंक तिमिर भास्कर– कांशीराम बलराम (18वीं सदी)
9.व्याधि निग्रह – आचार्य विश्राम (18वीं सदी)
10वैद्य सार संग्रह – रघुनाथ शास्त्री एवं कृष्ण शास्त्री
11.चिकित्सादर्श – पं. राजेश्वर दत्त शास्त्री (स्वास्थवृत्त समुच्चय भी इनकी रचना है)
12.चिकित्सा प्रदीप – वैद्य भास्कर विश्वनाथ गोखले
13.भिषक कर्म सिद्धि – रमानाथ द्विवेदी

आचार्य चक्रपाणि की प्रमुख पुस्तकें

चिकित्सा संग्रह/चक्रदत्त (वृन्दकृत सिद्धयोग को आधार लेकर लिखी गयी), द्रव्यगुण संग्रह, सर्वसार संग्रह, व्यग्रदरिद्र शुभंकर, शल्य चंद्रिका, व्याकरण तत्व चंद्रिका, मनोरमा खण्डन, गूढवाक्य बोध।

प्रमुख पत्र–पत्रिकायें

आरोग्य सुधानिधि – 1901 हिन्दी प्रथम मासिक पत्रिका
सुधानिधि – 1907 गया से प्रकाशित

स्वास्थ्य – 1953 कालेडा अजमेर
धन्वंतरि – 1924 अलीगढ
सचित्र आयुर्वेद – 1948 पटना
आयुर्वेद विकास – 1952 डाबर इंडिया कोलकात्ता

कमेटियां

1.भोर कमेटी 1945–
देशी चिकित्सा का अधिकार राज्यों को दिया जाये।
आयुर्वेदचिकित्सकों को राजकीय स्वास्थ्य सेवाओं मे लिया जाये।
भोर कमेटी को हेल्थ सर्वे एण्ड डेवलपमेण्ट कमेटी भी कहा जाता है।
2.चोपडा कमेटी 1946– समन्वयात्मक शिक्षा मूल सिद्धान्त।पश्चिमी व देशी चिकित्सा पद्धतियों का समन्वय आवश्यक है।
आयुर्वेद के विद्यार्थियों को संस्कृत रसायन भौतिक जन्तु व वनस्पति विज्ञान का ज्ञान होना चाहिए।
कुल पाठ्यक्रम 5.5 वर्ष का होना चाहिए।
ग्रामीण चिकित्सक योजना का प्रतिपादक।
3.पंडित कमेटी 1949–
जामनगर में केन्द्रीय अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की अनुशंसा।
जामनगर मे स्नातकोतर पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो ।
4.दवे कमेटी 1955–
आयुर्वेद रजिस्ट्रेशन बोर्ड की स्थापना की अनुंशंसा।
5.उडूप कमेटी 1958–
सी.सी.आई.एम. की स्थापना की अनुशंसा।
आयुर्वेद का राष्ट्रीयकरण हो ।
आयुर्वेद मे बी फार्मा चलाया जाये ।
6.सम्पूर्णानन्द कमेटी –1958
आयुर्वेद प्रधान पाठ्यक्रम की अनुशंसां की ।
7.व्यास कमेटी 1963 –
शुद्ध आयुर्वेद पाठयक्रम की अनुशंसा।
• बोर्ड ऑफ इण्डीयन मेडिसिन की स्थापना जस्टिस गोकर्णनाथ कमेटी की सिफारिश पर 1926 मे हुई
•इण्डियन मेडिसिन एक्ट 1939 मे पारित ।संशोधन 1956 मे हुआ ।
•इण्डियन मेडिसिन एक्ट के अनुसार प्रमि बोर्ड 1947 मे गठित हुआ ।

आयुर्वेद के क्षेत्र में भारत के प्रमुख सम्मान
पदम भूषण – प. सत्यनारायण शास्त्री, प. शिव शर्मा
पदम श्री – के.एन.उडुप्पा, बालेन्द्र प्रकाश
पदम विभूषण – वृहस्पति त्रिगुणा, डॉ. पी.के. वारियर
महामोपाध्याय – द्वारकानाथ सेन, गणनाथ सेन, विजय रत्न सेन
कविराज – गंगाधर राय
चरकाचार्य – कविराज धर्मदास वैद्य
कवीन्द्रमणी – राजवैद्य रामसेन
वैद्य रत्न – द्वारकानाथ सेन, गोपालाचार्यालु
धन्वन्तरि पुरुस्कार – पं. शिव शर्मा
आयुर्वेद महर्षि – दयाराम अवस्थी, मुरारीलाल मिश्रा

प्राचीन भारत में आयुर्वेद के प्रमुख केन्द्र

काशी – शल्य, विदेह – शालाक्य, तक्षशिला – कायचिकित्सा, अंग देश – गजायुर्वेद, पश्चिमोत्तर – अश्वायुर्वेद, पूर्व देश – भूत विद्या व पशु चिकित्सा, दक्षिण प्रदेश – अगद तंत्र व रसशास्त्र

आयुर्वेद के विभिन्न अंगों पर संहिताऐं

कायचिकित्सा – अत्रि संहिता, अग्निवेश संहिता, भेल संहिता, जतुकर्ण संहिता, पाराशर संहिता, हारित संहिता, क्षारपाणि संहिता, खरनाद संहिता, विश्वामित्र संहिता, मार्कण्डेय संहिता, आश्विन संहिता, भानुपुत्र संहिता, भारद्वाज संहिता,।

शल्य तंत्र – सुश्रुत संहिता, औपधेनेव तंत्र, पौष्कलावत तंत्र, गौपुररक्षित तंत्र, औरभ तंत्र, करवीर्य तंत्र, कृतवीर्य तंत्र, वैतरण तंत्र, भोज तंत्र, वृद्ध भोज तंत्र, भालुकि तंत्र, गौतम तंत्र, कतिल तंत्र।

शालाक्य तंत्र – (प्रवर्तक – निमि) कराल तंत्र, विदेह तंत्र, कृष्णात्रेय तंत्र, निमि तंत्र, कांकायन तंत्र, गार्ग्य तंत्र, भद्रशौनक तंत्र, गालव तंत्र, काव्यायन तंत्र, शौनक तंत्र, सात्यकि तंत्र, चक्षुष्य तंत्र।

कौमारभृत्य – हिरण्याक्ष तंत्र, वृद्धकाश्यप संहिता, पर्वतक तंत्र, काश्यप संहिता (वृद्ध जीवक तंत्र), बंधक तंत्र, कुमार तंत्र।

अगद तंत्र – उशनः संहिता, सनक संहिता, वृहस्पति संहिता, लाटयायन संहिता, गुरुड संहिता, आल्म्बायन संहिता।

रसायन तंत्र – पातंजल तंत्र, अगस्त तंत्र, व्याडि तंत्र, भृगु तंत्र, माण्डव्य तंत्र, वशिष्ठ तंत्र, कक्षपुट तंत्र, कपिंजल तंत्र, नागार्जुन तंत्र, आरोग्य मंजरी तंत्र।

वाजीकरण – कुचुमारतंत्र

भूतविद्या – अर्थवेदीय अर्थवांगिरस कृत्य।

अश्व चिकित्सा – (प्रवर्तक आचार्य – शालिहोत्र) अश्व चिकित्सा (18 अध्याय)–नकुल कृत, अश्व चिकित्सा (68 अध्याय)–जयदत्त कृत, अश्ववैद्यक–दीपंकर, लक्षणप्रकाश (अश्वप्रकरण)–हेमाद्रि, शालिहोत्र–भोज।

गजायुर्वेद – (प्रवर्तक आचार्य – पालकाप्य/ये अंगदेश के राजा रोमपाद के यहां गज चिकित्सक थे) हस्त्यायुर्वेद–पालकाप्य, गजशास्त्रम्–पालकाप्य, गजलक्षण–वृहस्पति, मातंगलीला–नीलकंठ।

गवायुर्वेद – पांडवों में सहदेव गवायुर्वेद विशेषज्ञ माने जाते हैं।

मृग, पक्षी – जैन पण्डित हंसदेव।

कुछ प्रमुख आयुर्वेद पुस्तकों के रचियता

कल्याणकारक – उग्रादित्याचार्य (9वीं सदी)

योग शतक – नागार्जुन कृत (चन्द्रकला टीका–धुव्रपाद, वल्लभा टीका–सनातन, विश्वल्लभा–महीधर)

सिद्धसार संहिता – आचार्य दुर्ग (9वीं सदी)

आयुर्वेद प्रकाश – पं. केशवकृत (17वीं सदी)

परहितसंहिता – श्रीनाथ पंडित

आयुर्वेद सांख्य – टोडरमल्ल

आयुर्वेद विज्ञान – कविराज विनोदलाल सेन गुप्त

नाडी परीक्षा – रावण

नाडी परीक्षा – गंगाधर राय

नाडी विज्ञान – महर्षि कणाद प्रणीत, गोविन्दराय सेन

योग तरंगिणी – त्रिमल्ल भट्ट

पंचभूत विज्ञानम्, त्रिदोष विज्ञानम् – कविराज उपेन्द्रनाथ दास

त्रिदोष तंत्र विमर्श – रामरक्ष पाठक

त्रिदोष संग्रह – धर्मदत्त वैद्य

प्रत्यक्ष शारीरम् – गणनाथ सेन

आरोग्य दर्पण – पण्डित जगन्नाथ शर्मा

शरीर विनिश्चय – ज्योतिषचन्द्र सरस्वती
आयुर्वेदादर्श संग्रह – पं. दामोदर शर्मा गौड
स्वास्थ्य विज्ञान – गोविन्द घाणेकर
आयुर्वेद चिंतामणि – बलदेव प्रसाद मिश्र
वैद्यक शब्द सिन्धु – उमेशचन्द्र गुप्त
वेदों में आयुर्वेद – रामगोपाल शास्त्री
वाल्मीकि रामायण में आयुर्वेद – अम्बालाल जोशी
द्रव्यगुण मंजूषा – शिवदत्त शुक्ल
सौश्रुति, अरिष्ट विज्ञान, भिषक कर्म सिद्धि – रमानाथ द्विवेदी
वनौषधि चंद्रोदय – चंद्रराज भंडारी
वनौषधि दर्पण – बिरजा चरण सेन
वनौषधि दर्शिका – ठाकुर बलवन्त सिंह
क्रियात्मक औषध विज्ञान – विश्वनाथ सिंह
काश्यप संहिता (हिन्दी) – सत्यपाल आयुर्वेदालंकार
वृहत्रयी पर हिन्दी टीका – अत्रिदेव
वृहत्रयी पर संस्कृत टीका – जेज्जट
शरीरक्रिया विज्ञान, निदान हस्तामलक – रणजीत राय देशाई

National institutes of India

New Delhi -National Malaria Institute

- National Immunology Institute
- Indian Drug and Pharmaceutical Limited
- Council of Scientific and Industrial Research
- Defence Research and Development Organisation (DRDO)
- Indian Council of Agricultural Research
- Indian Council of Medical Research (ICMR)
- Institute of Genomics and Integrative Biology
- International Centre for Genetic Engineering and Biotechnology
- National Brain Research Centre - Manesar Gurgaon
- National Institute of Communicable Disease
- Morarji Desai National Institute of Yoga
- National Ayurveda Vidyapeeth
- Central Family Planning Institute
- National Centre for Disease Control (NCDC)
- Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS)

Kolkatta

- All India Institute of Hygiene and Public Health
- Indian Institute of Experimental Medicine
- Serological and Chemical Examination Laboratory
- Central Drug Laboratory
  National Institute of Homeopathy

Mumbai

- All India Institute of Physical Medicine and Rehabilitation
- Cancer Research Institute (CRI)

Pune

- Virus Research Laboratory

- National Institute of Naturopathy
- National AIDS Research Institute

Lucknow

- National Botanical Garden
- Indian Institute of Toxicology Research
- Central Drug Research Laboratory

National Institute of Unani Bangalore

- Medicine
- National Institute of Mental Health and Neuro Sciences (NIMHANS)
- National Tuberculosis Institute

Hyderabad

- Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB)
- National Institute of History of Indian Medicine
- Nutritional Research Institute

Chennai-National Institute of Siddha

- Institute of Post Graduate Teaching & Research in Ayurveda (IPGT & RA)

National Days

National Leprosy Eradication Day 30 Jan
Pulse Polio Day 22 Feb
National Tuberculosis Day 24 Mar
World Health Day 7 Apr
World Malaria day 25 Apr
World Asthma Day 3 May
World Thalassemia Day 8 May **{MHCET (PG) 2011}**
Red Cross Day 8 May
World No Tobacco Day 31 May
World Hepatitis Day 28 July
World AIDS Day 1 Dec

Various acts in India

Drugs and Cosmetics Act 1940
Drugs and Cosmetics Rule 1945
PC and PNDT Act 1994
The Transplantation of Human Organs Act 1994
Mental Health Act 1987
Medical Termination of Pregnancy Act 1971

भेलसंहिता

(भेल कृत– ये अग्निवेश के सहपाठी तथा आत्रेय के शिष्य थे।)

कुल 8 स्थान सूत्रस्थान–30, निदानस्थान–8, विमानस्थान–8, शारीरस्थान–8, इन्द्रियस्थान–12, चिकित्सास्थान–30, कल्पस्थान–12, सिद्धिस्थान–12

•जनपदोध्वंस को जनमार नाम से संबोधित किया है।
•ज्वर के साथ होने वाली पिडकाओं का उल्लेख किया है।
•उच्चटा (गुंजा) नामक औषध का विशेष उल्लेख किया है।
•अर्श प्रकरण में तालीशपत्र वटिका नाम से **प्राणदा गुटिका का** वर्णन किया है।
•शुकनास घृत का वर्णन अपतंत्रक चिकित्सा में किया है।
•अर्थोपार्जन पर बल दिया है।
•चिकित्सा के चतुष्पादों में भेषज को प्रथम वैद्य को अंतिम तथ उपस्थाता को प्रतिश्रावी कहा है।
•वात की तरह पित्त तथा कफ के वेग को भी अधारणीय वेग कहा है तथा इनके धारण करने से होने वाले रोगों को भी बताया है।

•जल को महारस तथा अन्न को महौषधम् कहा है। **(आपो महारस विद्यादन्नं चैव महौषधम्)**
•रसादि प्रदोषज विकारों की तरह गर्भ प्रदोषज विकार भी बतलाये हैं।
•हृदय की आकृति – **पुण्डरीक संस्थानं कुम्भिकायां फलस्य च।**
•सभी दूधों को अभिष्यंदी कहा है विशेषकर गाय के दूध को अभिष्यंदी कहा है।
•निरंतर गीत गाते रहने को पित्तोन्माद का लक्षण कहा है।
•रंजक पित्तक को राजक पित्त नाम दिया है।
•भेल ने मन का स्थान शिर एवं तालु प्रदेश के मध्य माना है। **(शिरः ताल्वेन्द्रिय गतम् परं मनः)**
•वारुणी मद्य को प्रमुख रक्तप्रदूषक माना है।
•स्वेद, रक्त, मूत्र व फेन को आभ्यन्तर मल कहा है।
•रति मूल शरीरं हि शरीरस्य रतिः फलम्
•पुंडरीक कुष्ठ के फूटने पर ऋष्यजिह्व ऋष्यजिह्व के फूटने पर काकणक कुष्ठ की उत्पत्ति होती है।
•शिरोरोगों में शिरःकंप व मुर्धश्वयथु नामक विकारों का वर्णन हुआ है।

कुछ प्रमुख योग –

•अश्वत्थमलादि मोदक, शतपाक मधुकतैल – राजयक्ष्मा
•दशांग घृत, दाधिक घृत – गुल्म
•हिंगुपंचकम, वल्लभक घृत – अर्श
•तालीशपत्र वटिका/प्राणदा गुटिका – अर्श
•शिवा वर्ति – विसूचिका
•मस्तिष्क व शुक्र का प्रमाण 1–1 अंजली माना है।
•आलोचक पित्त के 2 भेद –चक्षु वैषेशिक व बुद्धि वैशेषिक
•क्षारि व उपक्षारि भेद से दो प्रकार के पृष्ठ रोग माने हैं।
•3 प्रकार का पिण्डीतक (मदनफल) – कृष्ण, श्वेत व मदन
•त्रिऐषणाएं – प्राणैषणा, धनैषणा व **धर्मैषणा** (चरक – प्राणैषणा, धनैषणा, परलोकैषणा

त्रिफला प्रयोग –

	भोजन जीर्ण होने पर	**भोजन से पूर्व**	**भोजन के बाद**
चरकानुसार	**हरड**	**बहेडा**	**आंवला**
भेलानुसार	**बहेडा**	**आंवला**	**हरड**

•प्रत्येक दोष के अनुसार श्रेष्ठ उपक्रम –
वात–वृहंण,
यापत 10 माने हैं।पित्त–परिशोधन,
कफ–प्रच्छर्दन,
सन्निपात–विरेचन
•ऋतु अनुसार मैथुन– शिशिर – प्रत्येक 7 दिन बाद, बसंत – प्रत्येक 15 दिन बाद,ग्रीष्म – प्रत्येक 30 दिन बाद ।वर्षा – प्रत्येक 9 दिन बाद, शरद – प्रत्येक 10 दिन बाद, हेमन्त – प्रत्येक 5 दिन बाद
•7 दिव्य तथा 7 मानुष काय माने हैं।
•7 प्रकार के भस्ममेहों का वर्णन प्रमेह के अंतर्गत किया है।
•7 प्रकार के अर्म, 7 प्रकार के श्लीपद व 7 प्रकार के शुक्र दोष माने हैं।
•गर्भिणी में 7वें माह मे किक्किस रोग की उत्पत्ति हो जाती है। (चिकित्सा – त्रिफला चूर्ण+शशक रक्त का लेप)
•अष्टविध स्वेद – संकर, प्रस्तर, नाडी, सेक, द्रोणि, जलस्वेद, उदकोष्ठ, कुटि स्वेद

•8 प्रकार के यवागु, 12 प्रकार के पथ्य अन्न व 300 प्रकार के उपनाह बतलाए हैं।
•9 साध्य व 9 असाध्य – 18 कुष्ठ।•शरीर में 10 अन्तर्गुहा व 10 बहिर्गुहाएं मानी हैं।
•वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन व्यापद 10 माने है।

योगरत्नाकर

•मयूर पारद भिक्षुकृत् (17वीं सदी)
•कायचिकित्सा प्रधान ग्रंथ है। शारीर व शल्य को छोड़कर सभी विषयों का समावेश है।
•मूत्र की तैल बिन्दू परीक्षा का वर्णन है।
सूर्योदय से पूर्व रोगी की आदि व अन्त की धार को छोड़कर मूत्र त्याग करायें। सूर्योदय के पश्चात 1 सींक तैल मे डुबोकर 1 बूंद तैल की मूत्र मे छोड़ दें
तैल बूंद डालते ही फैल जाये – साध्यरोग ।
ना फैलकर एक स्थान पर स्थिर रहे – कष्टसाध्य रोग।
तैल बिन्दु मूत्र की तली मे डूब जाये – असाध्य रोग ।
पूर्व मे चली जाये – शीघ्र निरोगी व सुखी ।
पश्चिम मे चली जाये – निरोगी व सुखी ।
उत्तर मे चली जाये – निश्चित रूप से आरोग्य।
दक्षिण मे चली जाये – उत्तरकाल मे क्रमशः निरोगी ।
ईशान – 1 माह तक जीवित ।
आग्नेय व नैऋत्य – मृत्यु निश्चित ।
वायव्य – अमृत सेवन से भी जीवित नहीं ।
•अष्टविध परीक्षा का वर्णन – नाडी मूत्रं मलं जिह्वा शब्द स्पर्शदृगाकृति।
पुरुषों में दाहिने हाथ व स्त्रियों में बायें हाथ की नाडी का परीक्षण करना चाहिये।
•अष्ट मांगलिक वस्तुएं – ब्राह्मण, गौ, अग्नि, सुवर्ण, घृत, सूर्य, स्त्री व राजा।
अष्टमंगलघृत – ग्रहबाधानाशक।
अग्नि व शुक्र की रक्षा का निर्देश दिया।
•आमवात चिकित्सा सूत्र – लंघनं स्वेदनं तिक्तदीपनानि कटूनि च। विरेचनं स्नेहपानं वस्तयश्चाममारुते।।
•ज्वर चिकित्सा सूत्र – ज्वरादौ लंघनं शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्। ज्वरान्ते रेचनं प्रोक्तमेतज्ज्वरचिकित्सितम्।।
•मैथुन काल
हेमन्त शिशिर – ईच्छानुसार, बसंत शरद – 3–3 दिन पर ग्रीष्म वर्षा – 7–7 दिन पर
5–5 दिन पर नख व श्मश्रु कर्तन का निर्देश है।
•पूतिप्रमेह गोनेरिया के लिए प्रयुक्त हुआ है।
•नेत्ररोगों **में भीमसेनी कपूर** मौलिक देन है।
•नस्य हेतु कटुतैल को श्रेष्ठ कहा है।
•सितोपलादि चूर्ण को विषम ज्वर में, चन्द्रप्रभावटी को अतिसार में तथा तालीसादि चूर्ण को ग्रहणी चिकित्सा अध्याय में वर्णित किया है।
•अम्लपित्त का विस्तृत वर्णन किया है।
•स्नायुक रोग का भी वर्णन किया है, चिकित्सा विसर्पवत बतायी है।
•सोमरोग का सर्वप्रथम वर्णन तो वंगसेन ने किया पर यो.र. में भी वर्णन है, चिकित्सा कदली घृत।

•भस्मक रोग का नामतः वर्णन।
•कुरण्ड (वेदना रहित अंड वृद्धि) – समभाग कर्ण सिरा का वेधन।
•देव कर्दम – चन्दन, अगरु, कर्पूर, केशर
•यक्ष कर्दम – कंकोल, अगरु, कर्पूर कस्तूरी, यक्षधूप
•44 प्रकार के क्षुद्ररोगों का वर्णन किया है।

•प्रमुखयोग –

शशिलेखा वटी – श्वित्र,
सिंहनाद गुग्गुलु – आमवात,
कैशोर गुग्गुलु – वातरक्त,
राजमृगांक रस – राजयक्ष्मा,
वानरी गुटिका – वाजीकरण,
कुष्माण्डखंड – अम्लपित्त,
नवकार्षिक गुग्गुलु – भगन्दर।,
लाक्षा, आभा गुग्गुलु – भग्न।
लीलाविलास रस – अम्लपित्त,
रास्नासप्तक क्वाथ – आमवात,